खुसरो पाती प्रेम की, बिरला बाँचे कोय

गायत्री सिंह

'प्रेम आज भी सभी की आवश्यकता है, सभी इसकी आकांक्षा भी करते हैं, पर कोई प्रयत्न नहीं करना चाहता। भौतिक संसाधनों की प्राप्त तथा भौतिक सुखों की चाहना, आज के मनुष्य को अपने आकर्षण में बांधे हुए है, इसलिए सभी अपने आप में व्यस्त और गुम रहते हैं। दूसरों की बात शायद ही जेहन में आती है। इसलिए यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि विज्ञान युग भले ही संसाधनों और सामानों की उपलब्धि सहज कर दे, परन्तु मानवीय मूल्यों और भावनाओं की न तो वह निर्मित कर सकता है, न पूर्ति ही। वह 'प्रेम' की क्षुधा नहीं शान्त कर सकता। वर्तमान मनुष्य को 'प्रेम' के स्वरूप अहमियत, और व्यापकता को समझना चाहिए और भौतिक वस्तुओं के प्रति मोह त्याग कर आन्तरिक गुणों की तरफ ध्यान देना चाहिए। 'प्रेम' एक ऐसी वस्तु है, जिसे किसी को दिया जाय तो कई गुना होकर वापस लौटती है और जिसे 'प्रेम' मिल जाय, फिर उसे कोई अभाव नहीं सताता।